व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में कौशल शिक्षा की उपादेयता

गीता रानी
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
geeta.ranilko@gmail.com

प्राप्त तिथि– 27.05.2016; स्वीकृत तिथि– 02.09.2016

सार– प्राचीन समय में व्यक्तित्व का अर्थ लैटिन भाषा के शब्द "परसोना" से लगाया जाता था। जिसका अर्थ है "मुखौटा"। ग्रीक अभिनेता इस मुखौटे का प्रयोग अभिनय करते समय अपनी पहचान छिपाने के लिए किया करते थे। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को आंतरिक तथा वाह्य क्रियाओं का संगठित रूप कहा है। व्यक्तित्व के वाह्य गुणों में अभिक्षमताओं व योग्यताओं को शामिल किया जाता रहा है। प्रायः देखा गया है कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से ही अन्य लोगों को प्रभावित करता है। सामान्य रूप से एक प्रभावशाली व्यक्तित्व में कुछ कौशलों का विकास शिक्षा द्वारा करना चाहिए जैसे शारीरिक क्रियाएं, स्वयं साधन(सेल्फ रियलाइजेशन), समूह कार्य, मानवीय मूल्य इत्यादि।

बीज शब्द– व्यक्तित्व, कौशल, शिक्षा।

Importance of skill based education for the development of personality

Geeta Rani
Associate Professor, Department of Education
B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226001, U.P., India
geeta.ranilko@gmail.com

Abstract- The term personality is derived from Latin word 'persona' which means 'mask' in olden days. The Greek actors used a mask to hide their identity. The personality is the organization of the internal and external activities. It includes the external appearances, qualities, aptitude and capacities etc. One individual effects other individual through his personality. Generally, some skills should be developed for effective personality through education as – physical activities, self realization, team work, human values etc.

Key words- Personality, skills, education.

किसी भी बच्चे का विकास उसके शैशवावस्था से प्रारम्भ हो जाता है, जैसे–जैसे उसका विकास होता है वैसे–वैसे ही उसके व्यवहार में व्यक्तित्व के लक्षण दिखायी देने लगते हैं। बच्चे के विकास का उत्तरदायित्व उसके माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्य एवं गुरूजनों पर होता है। इसी कारण बालक के विकास के सभी पक्षों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा का स्वरूप निर्धारित करना अति आवश्यक है। व्यक्तित्व के संतुलित एवं सर्वांगीण विकास हेतु उपयुक्त साधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। बच्चे के व्यक्तित्व विकास पर उसके परिवार एवं विद्यालय का विशेष प्रभाव पड़ता है। बच्चे के सर्वांगीण विकास यथा– शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक चारित्रिक तथा सामाजिक पक्षों को विकसित करने हेतु शिक्षा के स्वरूप से सम्बन्धित तथ्यों का वर्णन प्रायः होता रहा है। व्यक्तित्व की जाँच व परख द्वारा व्यक्तिगत भिन्नताओं को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्यक्रम, पाठ्यविधि एवं परीक्षण विधि इत्यादि की व्यवस्था करनी चाहिए। शिक्षण द्वारा व्यक्तित्व सम्बन्धी परीक्षणों के आधार पर बच्चे की विभिन्न समस्याओं का समाधान किया जा सकता है जो कि उसके व्यक्तित्व–निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। व्यक्तित्व के कौशलों की चर्चा करने से पूर्व 'व्यक्तित्व' क्या है? इसे जानना अति आवश्यक है। 'व्यक्तित्व' शब्द Personality का हिन्दी रूपान्तर हैं। जो कि लैटिन भाषा के परसोना से बना है जिसका अर्थ मुखौटा है जिसे मंच पर अभिनय करते समय व्यक्ति अपनी पहचान छिपाकर एक नवीन रूप को प्रस्तुत करता था। सामान्यतया

व्यक्ति के संगठित व्यवहार के सम्पूर्ण चित्र को 'व्यक्तित्व' कहा गया तो वहीं दार्शनिक दृष्टि में 'व्यक्तित्व आत्मज्ञान' है, परन्तु मनोवैज्ञानिक रूप से व्याख्या करने से ज्ञात होता है कि व्यक्ति में आन्तरिक और वाह्य रूप से जो विशेषताएँ, योग्यताएँ और विलक्षणताएँ होती है, उन सबका समन्वित रूप ही 'व्यक्तित्व' है। बीसर्न्ज और बीसर्न्ज, मन तथा ड्रेवर इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को मानव की आदतों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं, योग्यताओं, अभिरूचियों व व्यवहार के तरीकों का विशिष्ट संगठन कहा है। इन विचारकों से अलग अलपोर्ट का कहना था कि ''व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसका अद्वितीय समायोजन निर्धारित करता है।''

अलपोर्ट की परिभाषा अन्य की अपेक्षा अधिक उपयुक्त समझी गयी क्योंकि उन्होंने 'व्यक्तित्व' में शारीरिक व मानसिक दोनों गुणों को शामिल किया है और 'गत्यात्मक संगठन' इसलिए क्योंकि इसमें व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने की शक्तियाँ विद्यमान हैं दूसरा तथ्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के मानसिक व शारीरिक गुण स्थिर नहीं रहते हैं, परिस्थिति अनुसार उनमें परिवर्तन होते रहते हैं। तीसरा तथ्य यह कि व्यक्तियों की मनोशारीरिक अवस्थायें एक समान नहीं रहती हैं, अर्थात् व्यक्तित्व सम्बन्धी समायोजन वैयक्तिक भिन्नताओं से प्रभावित होता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कुछ कार्य किये है, जो कि निम्नवत है–

ऑलपोर्ट(1897-1967) एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों में से एक है। सन् 1919 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने टर्की के रॉबर्ट कॉलेज में लगभग दो वर्ष तक अध्यापन कार्य किया, उन्होंने 'व्यक्तित्व' पर कई पुस्तकें लिखी, जिनमें पर्सनालिटी(1937), द नेचर ऑफ प्रीज्यूडिसिस(1954) प्रमुख हैं। आपने 1937–1947 तक जर्नल ऑफ एबनॉर्मल एण्ड सोशल साइकोलॉजी, पर सम्पादक का कार्य किया। रेमण्ड बी0 कैटल(1905-1998) का जन्म 1905 में इंग्लैण्ड में हुआ, उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से एम0ए0, पी–एच0डी0, एण्ड डी0एस–सी0 की डिग्री ग्रहण की। 1932–37 तक चाइल्ड गाइडेन्स क्लीनिक के निदेशक बने, उन्होंने थोर्नडाइक व स्टैनले के साथ जेनेटिक साइकोलॉजी पर कार्य किया। कैटल को अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि 16 पर्सनालिटी फैक्टर्स क्वेश्चनायर से प्राप्त हुयी। उनके द्वारा व्यक्तित्व सिद्धान्त पर हुये शोधकार्य के निष्कर्षों को अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, जापान, भारत व अफ्रीका के जर्नल में प्रकाशित किया गया। कार्ल जुंग(1775–1861) एक स्विस मनोविश्लेषण कहे जाते थे उन्होंने 1902 में मेडिकल डिग्री लेने के पश्चात् उन्होंने ज्यूरिख व अन्य स्थानों में 'मानसिक रोगों' पर अध्ययन किया। जुंग ने 'व्यक्तित्व' को 'अन्तर्मुखी(Introvert) एवं वर्हिमुखी(Extrovert) दो भागों में विभाजित किया। उनका मानना था कि स्वयं पर केन्द्रित रूचि वाले व्यक्ति अन्तर्मुखी तथा जिनकी रूचि भौतिक एवं सामाजिक वातावरण की ओर रहती है वे बर्हिमुखी हैं। अन्तर्मुखी व बर्हिमुखी व्यक्तित्व की दो चरम सीमाओं के मध्य जो व्यक्ति आते हैं, वे 'उभय मुखी'(Ambivert) की श्रेणी में आते हैं। एच0 ए0 मैसलो(1908–70) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने सैल्फ एक्च्युलाइजेशन(1954), मोटीवेशन एण्ड पर्सनालिटी(1962), टुवर्ड एण्ड साइकोलॉजी ऑफ बीन्ग, पर कार्य किया। उनका मानना था कि 'मानव प्रेरक' एक क्रम में व्यवस्थित होते हैं जिन्हें पाँच भागों में विभाजित किया यथा– मनोदैहिक प्रेरक, सुरक्षा प्रेरक, प्रेम व लगाव, आत्मसम्मान प्रेरक तथा आत्मानुभूति प्रेरक इत्यादि।

किसी भी व्यक्तित्व में सम्मिलित गुण या व्यवहार देश, काल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। किसी समय विशेष या परिस्थितियों में व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को समझना कठिन है, परन्तु असम्भव नहीं। यदि व्यक्ति में मनोशारीरिक गुणों का संगठन अव्यवस्थित है तो व्यक्ति को वातावरण से सामंजस्य करने में कठिनाई अनुभव होती है और समायोजन सम्बन्धी समस्याएँ प्रकट होने लगती हैं। वातावरण से समुचित समायोजन तभी संभव हो सकता है जबकि व्यक्ति संगठित हो, अर्थात् व्यक्तित्व के अन्तर्गत व्यक्ति की बौद्धिक क्षमताएँ, संवेग, इच्छाएँ, संकल्पशक्ति इत्यादि मानसिक क्रियाएँ व्यवस्थित और संगठित रूप से कार्य करती रहें। सामान्यतया व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु कुछ कौशल विकसित करने की आवश्यकता है जो कि निम्नांकित हैं :–

1. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य उत्तम स्तर का हो, इस हेतु परिवार व विद्यालय में व्यायाम, योगाभ्यास जैसी कक्षाएँ आवश्यक विषयों के रूप में पढ़ायीं जाएं।
2. आत्मचेतना को ध्यान के माध्यम से दृढ़ संकल्प करने की शिक्षा दी जाये तभी आत्म चेतना कर्त्तव्यपालन के लिए बच्चे को सजग रख सकती है।
3. सामाजिकता की भावना विकसित करने हेतु सहृदयी, सहयोगी, दया करूणा प्रदर्शित करने वाले बच्चों की प्रशंसा करनी चाहिए।

4. शिक्षक को सभी परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए मित्रवत व्यवहार करना चाहिए इस हेतु कक्षा में समूह बनाकर प्रोजेक्ट वर्क/टीम वर्क देना चाहिए।
5. शिक्षक को दृढ़ संकल्प शक्ति को विकसित करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील व सजग रहकर सहयोग करना चाहिए।
6. बच्चों में उच्च स्तर महत्वाकांक्षा और उद्देश्यपूर्णता विकसित हो सके इस हेतु उसके लक्ष्यों की चर्चा कर उन्हें दिशा–निर्देश देकर प्रेरित करना चाहिए।
7. बच्चों को तकनीक व प्रौद्योगिक उपकरणों जैसे– मोबाईल, टी0वी0, रेडियो इत्यादि का उत्तम प्रयोग करने की शिक्षा दी जाये तथा व्यक्तित्व पर दुष्प्रभाव डालने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण बंद किया जाये।
8. बच्चों द्वारा अभिव्यक्ति देते समय उनकी भाव–भंगिमाओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। अर्थात् उनके बॉडी लैंग्वेज पर विशेष ध्यान दिया जाये और उन्हें इसकी सही शिक्षा दी जाये।
9. भाषा दोष एवं उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का तुरन्त निराकरण होना चाहिए।
10. व्यक्तित्व से सम्बन्धित उत्तम श्रेणी के दृश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग कर बच्चों को शिक्षित किया जाये।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व को उच्च स्तरीय बनाने हेतु सतत् रूप से सजग व सक्रिय रहने की आवश्यकता है। वर्तमान समय की चुनौतियों को श्रेष्ठ व्यक्तित्व ही समाप्त करने में सक्षम हो सकते हैं न कि साधारण व्यक्तित्व। आधुनिकता की दौड़ में माता–पिता अपने बच्चों पर पूर्णतया ध्यान नहीं दे पाते हैं ऐसी स्थिति में उन्हें छुट्टियों में शैक्षिक यात्राएँ अवश्य करवा सकते हैं जिससे वे बच्चों के व्यक्तित्व में विकृति को आने से रोक सके। आवश्यकता इस बात की है कि कुछ श्रेष्ठ व्यक्तित्व यथा– गाँधी, नेहरू, कलाम, सुभाष चन्द्र बोस, अम्बेडकर, चन्द्रशेखर आजाद, तुलसी, कबीर, इत्यादि ऐसे कई ज्ञानी विद्वान भारत के रत्न के समान हैं जिन्होंने सभी क्षेत्रों यथा कला, विज्ञान, स्वास्थ्य, साहित्य, राजनीति आदि में अपने योगदान से लोगों को आश्चर्य चकित किया है परन्तु अफसोस इस बात का है कि जितनी अधिक सुविधाएँ वर्तमान समय में लोगों को प्राप्त है, उतने श्रेष्ठ गुणों को विकसित करने में हम समर्थ नहीं है। कारण, उत्साह व उल्लास की लालसाएँ हैं जिससे हम भोगवादी प्रवृत्ति के शिकार बन गये हैं परिणाम स्वरूप हम श्रेष्ठता को खोकर चकाचौंध में उलझ गये हैं। ऐसे में सभी को अपने–अपने स्तर से लोगों में मानवीय मूल्य विकसित करने की आवश्यकता हैं जो कि प्रत्येक के लिए सहनशीलता की परीक्षा होगी क्योंकि तभी वे परिवार व समाज का सहयोग कर श्रेष्ठ व्यक्तित्व का परिचय दे सकते हैं।

अवलोकित संदर्भ

1. शर्मा, मुकुल कुमार(2008) शिक्षा मनोविज्ञान, तुशार प्रकाशन, डिब्रूगढ़, आसाम।
2. सारस्वत, मालती(2012) शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. बाला, बाजपेयी एवं शुक्ला, सावित्री(2000) शिक्षा के आधारभूत तत्व, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. शुक्ल, ओ0पी0(2009) शिक्षा मनोविज्ञान, भारत बुक सेंटर, अशोक मार्ग, लखनऊ।
5. गुप्ता, एस0 पी0 एवं गुप्ता, अल्का(2003) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. मंगल, एस0 के0(2011) शिक्षा मनोविज्ञान, पी0एच0आई0, नई दिल्ली।